सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन

नाप-तोल में कमी करने वाले

पूरा सफ़र — छोटी बे-ईमानी और बड़ा दिन —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 83 • 36 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वैलुल्-लिल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन

1. बर्बादी है नाप-तोल में कमी करने वालों के लिए।

अल्लज़ीन इज़क्-तालू 'अलन्-नासि यस्तौफ़ून

2. जो लोगों से लेते हैं तो पूरा लेते हैं।

व इज़ा कालूहुम औ वज़नूहुम युख़्सिरून

3. और जब उन्हें नाप या तोल कर दें तो कम देते हैं।

यौम यक़ूमुन्-नासु लि-रब्बिल्-'आलमीन

6. जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।

कल्ला बल राना 'अला क़ुलूबिहिम मा कानू यक्सिबून

14. बल्कि उनके दिलों पर उनके अमल का ज़ंग चढ़ गया है।

व फ़ी ज़ालिक फ़ल्-यतनाफ़सिल्-मुतनाफ़िसून

26. और इसी के लिए रग़बत करने वालों को रग़बत करनी चाहिए।

एक छोटी बात पर बर्बादी

बेटा, यह सूरह एक धमकी से शुरू होती है — 'वैलुन', बर्बादी, हलाकत — और आप तवक़्क़ो करेंगे कि इसके बाद कोई बहुत बड़ा जुर्म आएगा: क़त्ल, शिर्क, ज़ुल्म। इसके बजाय अल्लाह ये बर्बादी एक ऐसी चीज़ पर एलान करते हैं जिसे ज़्यादातर लोग एक मामूली तिजारती आदत कहेंगे।

'वैलुल्-लिल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन — नाप-तोल में कमी करने वालों के लिए बर्बादी है।' बेटा, 'ततफ़ीफ़' 'तफ़ीफ़' से है — कोई ज़र्रा सी चीज़, मामूली सी। इसका मतलब है थोड़ा सा काट लेना — पूरी बोरी नहीं चुराना, बल्कि ख़रीदते वक़्त दो चार ग्राम ज़्यादा ले लेना और बेचते वक़्त दो चार ग्राम कम दे देना। इतना छोटा कि किसी को पता नहीं चलता। इतना छोटा कि करने वाले को ख़ुद भी चोर होने का एहसास नहीं होता।

और अल्लाह उनकी ठीक ठीक तारीफ़ करते हैं: 'अल्लज़ीन इज़क्-तालू 'अलन्-

नासि यस्तौफ़ून – वो जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं – व इज़ा कालूहुम औ वज़नूहुम युख़्सिरून – और जब उन्हें नाप या तोल कर दें तो कम देते हैं।'

बेटा, यह दोहरा मेयार है: अपने हक़ के मामले में सख़्त और मुकम्मल, दूसरे के हक़ के मामले में ढीले और लापरवाह। और यह सिर्फ़ दुकानदारों की बात नहीं। यह उस मुलाज़िम पर भी लगता है जो तनख़्वाह पूरी लेता है और वक़्त चुराता है; उस तालिब-ए-इल्म पर जो सहूलतें पूरी चाहता है और मेहनत आधी करता है; उस शौहर या बीवी पर जो अपने हुक़ूक़ गिनती से माँगते हैं और अपने फ़र्ज़ अंदाज़े से अदा करते हैं; उस मकान-मालिक पर, उस ठेकेदार पर, उस मैनेजर पर।

वो दिन जब इंसान खड़ा होगा

फिर अल्लाह एक ऐसा सवाल पूछते हैं जो बाज़ार की एक आदत को आख़िरत का मामला बना देता है: 'अ ला यज़ुन्नु उलाइक अन्नहुम मब्'ऊसून – क्या ये लोग ये नहीं समझते कि वो दोबारा उठाए जाएँगे – लि-यौमिन 'अज़ीम – एक अज़ीम दिन के लिए – यौम यक़ूमुन्-नासु लि-रब्बिल्-'आलमीन – उस दिन जब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे?'

बेटा, उस छलाँग को महसूस कीजिए जो सूरह ने अभी लगाई: चंद ग्राम अनाज से ले कर पूरी इंसानियत अल्लाह के सामने खड़ी होने तक। यही क़ुरआन का तरीक़ा है – वो आपको दिखाता है कि छोटी बे-ईमानी और बड़ा फ़ैसला एक ही रस्सी पर हैं।

और ये आयत – 'उस दिन जब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे' – उन में से है जो नेक लोगों को काँपा देती थी। बयान हुआ है कि इब्ने उमर (रज़ि0) ये सूरह पढ़ते और इस आयत पर पहुँच कर इतना रोते कि आगे नहीं पढ़ पाते।

बेटा, और यहाँ सूरह जो ताल्लुक़ जोड़ रही है वो ये है: जो आदमी किसी ग्राहक से चंद ग्राम चुराता है वो दर-असल वो आदमी है जो भूल चुका है कि एक खड़े होने का दिन मौजूद है। हर छोटी बे-ईमानी, हक़ीक़त में, एक छोटी भूल है।

सिज्जीन, और दिल पर ज़ंग

फिर सूरह रिकॉर्ड्स का ज़िक्र करती है: 'कल्ला इन्न किताबल्-फ़ुज्जारि ल-फ़ी सिज्जीन — हरगिज़ नहीं! बेशक बदकारों का नामा सिज्जीन में है — व मा अद्राक मा सिज्जीन — और आपको क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है? — किताबुम्-मर्क़ूम — एक लिखा हुआ रजिस्टर।' सिज्जीन, बेटा, 'सिज्न' से — एक क़ैदख़ाना: एक नीची, तंग, मुहर-बंद जगह जहाँ बदकारों के रिकॉर्ड्स क़ैद कर दिए जाते हैं।

'वैलुंय्-यौम-इज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन — उस दिन बर्बादी है झुठलाने वालों के लिए — अल्लज़ीन युकज़्ज़िबून बि-यौमिद्-दीन — जो बदले के दिन को झुठलाते हैं। व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मु'तदिन असीम — और इसे कोई नहीं झुठलाता सिवाए हर हद से बढ़ने वाले गुनहगार के।'

बेटा, इस तशख़ीस को देखिए: इनकार आम तौर पर दिमाग़ से पैदा नहीं होता — वो अमल से पैदा होता है। पहले आदमी हद से बढ़ता है; फिर उसे दिन का झूटा होना ज़रूरी हो जाता है, इसलिए वो इनकार करता है। ज़िंदगी का अंदाज़ पहले आता है, और फ़लसफ़ा बाद में उसे जायज़ ठहराने के लिए गढ़ा जाता है।

'इज़ा तुत्ला 'अलैहि आयातुना क़ाल असातीरुल्-अव्वलीन — जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएँ तो वो कहता है: पिछलों के अफ़साने!' और फिर अल्लाह असल वजह बताते हैं, इंसानी दिल के बारे में क़ुरआन की सबसे अहम आयतों में से एक में:

'कल्ला बल राना 'अला क़ुलूबिहिम मा कानू यक्सिबून — हरगिज़ नहीं! बल्कि उनके दिलों पर 'रान' — दाग़, ज़ंग — चढ़ गया है उस वजह से जो वो कमाते रहे।'

बेटा, 'रान' वो ज़ंग और मैल की तह है जो लोहे पर जम जाती है। और नबी ﷺ ने ख़ुद इस आयत की तफ़्सीर फ़रमाई: जब बंदा एक गुनाह करता है, उसके दिल पर एक सियाह नुक़्ता रख दिया जाता है। अगर वो उसे छोड़ दे, तौबा कर ले और मग़फ़िरत माँगे, तो उसका दिल मँज कर साफ़ हो जाता है। मगर अगर वो फिर उसकी तरफ़ लौट जाए, तो नुक़्ता बढ़ता जाता है यहाँ तक कि उसके पूरे दिल को ढाँप लेता है — और यही वो 'रान' है जिसका अल्लाह ने ज़िक्र किया।

बेटा, इस अमल को समझिए: किसी का दिल एक दिन में सख़्त नहीं होता। ये नुक़्ता

दर नुक़्ता होता है, छोटे गुनाह दर छोटे गुनाह, हर एक बग़ैर तौबा के। और जब सतह पूरी तरह ढक जाती है, तो वही शख़्स जो कभी गुनाह पर शर्मिंदा होता था, अब कुछ महसूस ही नहीं करता — वो क़ुरआन सुनता है और उसे पुरानी कहानियाँ कहता है, इसलिए नहीं कि उसके दिमाग़ को कोई कमी मिली, बल्कि इसलिए कि उसका दिल ज़ंग से बंद हो गया।

इसी लिए तौबा फ़ौरन होनी चाहिए, बेटा। इसलिए नहीं कि एक गुनाह मार देने वाला है — बल्कि इसलिए कि एक बिन-मँजा नुक़्ता अगले को दावत देता है। और मँजने की चीज़ क्या है? इस्तिग़फ़ार, नमाज़, क़ुरआन, आँसू, और जल्दी लौट आना।

'कल्ला इन्नहुम 'अन रब्बिहिम यौम-इज़िल्-ल-मह्जूबून — हरगिज़ नहीं! बेशक वो उस दिन अपने रब से पर्दे में रखे जाएँगे।' बेटा, ये वुजूद का सबसे बड़ा ख़सारा है — और इसकी ज़िद सबसे बड़ा तोहफ़ा। इमाम शाफ़ई (रह0) ने इस आयत को दलील बनाया: क्योंकि अल्लाह ने बदकारों को इस बात की धमकी दी कि वो उनसे पर्दे में होंगे, इसका मतलब है कि मोमिनीन उन्हें देखेंगे।

'इल्लिय्यून, और मुश्क की मुहर

और फिर सूरह पलटती है, और सब कुछ रौशन हो जाता है: 'कल्ला इन्न किताबल्-अब्रारि ल-फ़ी 'इल्लिय्यीन — हरगिज़ नहीं! बेशक नेकों का नामा 'इल्लिय्यीन में है।' बेटा, "उलुव्व' से — बुलंदी, ऊँचाई। बदकारों का नामा नीचे क़ैदख़ाने में बंद है; नेकों का नामा बुलंद कर दिया गया — 'एक लिखा हुआ रजिस्टर, जिसे मुक़र्रब फ़रिश्ते देखते हैं'।

'इन्नल्-अब्रार ल-फ़ी न'ईम — बेशक नेक लोग नेमत में होंगे — 'अलल्-अराइकि यन्ज़ुरून — सजाए हुए तख़्तों पर, देखते हुए। त'रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम नज़्रतन्-न'ईम — आप उनके चेहरों में नेमत की रौनक़ पहचान लेंगे।'

बेटा, क्या तफ़्सील है: उनकी ख़ुशी उनके चेहरों पर नज़र आएगी। और क्या ये अभी भी सच नहीं? जो दिल अल्लाह के साथ सुकून में हो वो चेहरे पर दिखता है — रात को नमाज़ पढ़ने वालों के चेहरों में एक नूर होता है जिसे कोई क्रीम नहीं बना सकती।

'युस्क़ौन मिर्-रहीक़िम्-मख़्तूम — उन्हें पाकीज़ा शर्बत पिलाया जाएगा, मुहर-बंद — ख़ितामुहू मिस्क — जिसकी मुहर मुश्क की होगी।'

बेटा, इस दुनिया में बोतल पर मोम की मुहर लगती है, और किसी को परवाह नहीं कि मुहर से कैसी ख़ुशबू आती है। जन्नत में, ख़ुद मुहर मुश्क की है — शर्बत की आख़िरी, सबसे कम अहम तफ़्सील भी एक ऐसी ख़ुशबू है जो ज़मीन की हर चीज़ से क़ीमती है। यही उस जगह का मेयार है, बेटा: वहाँ की पैकिंग भी इत्र है।

और फिर अल्लाह एक हैरत-अंगेज़ बात कहते हैं — वो मुक़ाबले का हुक्म देते हैं: 'व फ़ी ज़ालिक फ़ल्-यतनाफ़सिल्-मुतनाफ़िसून — और इसी के लिए मुक़ाबला करने वालों को मुक़ाबला करना चाहिए।'

बेटा, हमें बार बार कहा जाता है कि दुनिया पर मुक़ाबला मत करो — दौलत में अपने से ऊपर वालों को मत देखो। और यहाँ अल्लाह फ़रमाते हैं: मुक़ाबला करो! दौड़ लगाओ! ज़ोर लगाओ! मगर इसी पर। जन्नत पर, उस मुहर-बंद शर्बत पर, उन चेहरों की रौनक़ पर। इंसान एक मुक़ाबले की जिबिल्लत के साथ बनाया गया है, और अल्लाह हमसे उसे मारने को नहीं कहते — वो उसे उस वाहिद दौड़ की तरफ़ मोड़ देते हैं जिसे जीतना क़ाबिल-ए-क़द्र है।

आख़िर में कौन हँसता है

और सूरह एक शानदार इंसाफ़ के मंज़र पर ख़त्म होती है, बेटा — और ये आपको मुस्कुरा देगा।

'इन्नल्-लज़ीन अज्रमू कानू मिनल्-लज़ीन आमनू यज़्हकून — बेशक जो मुजरिम थे वो ईमान वालों पर हँसा करते थे — व इज़ा मर्रू बिहिम यतग़ामज़ून — और जब उनके पास से गुज़रते तो आँखों ही आँखों में इशारे करते।'

बेटा, ये हर दौर का मज़ाक़ है, बिल्कुल ठीक बयान किया गया: हँसी, कोहनी मारना, दोस्तों के दरमियान आँख का इशारा जब कोई अमल वाला मोमिन गुज़रता है। 'व इज़न्-क़लबू इला अह्लिहिमु-न्क़लबू फ़किहीन — और जब अपने लोगों की तरफ़

लौटते तो चुटकुले लेते हुए लौटते' — घर जा कर कहानियाँ सुनाते, ख़ानदान का मज़ाक़ उड़ा कर दिल-बहलाते। 'व इज़ा र-अवहुम क़ालू इन्न हाउलाइ ल-ज़ाल्लून — और जब उन्हें देखते तो कहते: ये लोग तो गुमराह हैं!'

और फिर अल्लाह का पुर-सुकून तब्सिरा: 'व मा उर्सिलू 'अलैहिम हाफ़िज़ीन — हालाँकि वो उन पर निगराँ बना कर नहीं भेजे गए थे।' बेटा — किसी ने आपको दूसरों की हिदायत पर सुपरवाइज़र मुक़र्रर नहीं किया। और कितनी बार दीनदारों के सबसे ज़्यादा शोर मचाने वाले नाक़िद ठीक यही होते हैं: एक ऐसे मामले के ख़ुद-साख़्ता इंस्पेक्टर जो उन्हें सौंपा ही नहीं गया था।

और फिर पलट: 'फ़ल्-यौमल्-लज़ीन आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि यज़्हकून — तो आज, जो ईमान लाए वो मुनकिरों पर हँस रहे हैं — 'अलल्-अराइकि यन्ज़ुरून — सजाए हुए तख़्तों पर, देखते हुए।'

बेटा, वही फ़े'ल — 'यज़्हकून', हँसना — दोनों के लिए इस्तेमाल हुआ। मज़ाक़ उड़ाने वाले एक गुज़रती हुई दुनिया में चंद साल हँसे; मोमिनीन एक ऐसे बाग़ में हँस रहे हैं जो कभी ख़त्म नहीं होता।

और आख़िरी लाइन, एक ऐसा सवाल जिसमें मुस्कुराहट है: 'हल सुव्विबल्-कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्अ'लून — क्या मुनकिरों को उनके किए का बदला मिल गया?'

तो वो सूरह जो एक ताजिर के तराज़ू से चंद ग्राम काटने से शुरू हुई थी, वुजूद के हर तराज़ू के मुकम्मल बराबर हो जाने पर ख़त्म होती है। बेटा, यही पूरा पैग़ाम है: अल्लाह अल-'अद्ल हैं। एक ग्राम भी ग़लत नहीं लिया गया, एक मज़ाक़ भी बर्दाश्त किए बग़ैर नहीं गया, एक सब्र करने वाला मोमिन भी नज़र-अंदाज़ नहीं हुआ।

इस सूरह से क्या सीखा

1. दोहरे मेयार से बचिए: लेने में सख़्त, देने में ढीला — यही 'ततफ़ीफ़' है, और इसे 'बर्बादी' मिलती है।

2. ये सिर्फ़ दुकानदारों से आगे जाता है — मुलाज़िमों, तालिब-इल्मों, मियाँ-बीवी,

मकान-मालिकों और मैनेजर्स सब पर लगता है।

3. हर छोटी बे-ईमानी उस दिन की एक छोटी भूल है जब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।

4. इनकार अक्सर अमल के बाद आता है, दलील के बाद नहीं: पहले हद से बढ़ना, फिर उसे जायज़ ठहराने का फ़लसफ़ा।

5. 'रान' से बचिए: दिल नुक़्ता दर नुक़्ता, बिन-तौबा गुनाहों से ज़ंग खाता है — फ़ौरन इस्तिग़फ़ार और वापसी से मँजिए।

6. अपनी मुक़ाबले की जिबिल्लत का रुख़ मोड़िए: 'मुक़ाबला करने वालों को मुक़ाबला करना चाहिए' — उस मुहर-बंद शर्बत के लिए जिसकी मुहर ख़ुद मुश्क है।

7. आप कभी दूसरों की हिदायत पर निगराँ बना कर नहीं भेजे गए — और आख़िरी हँसी सब्र वाले मोमिन की है, मज़ाक़ उड़ाने वाले की नहीं।

या अल्लाह, हमारे देने में हमारे तराज़ू को ईमानदार रखिए, हमारे दिलों को ज़ंग खाने से पहले मँज दीजिए, और हमें उस चीज़ के लिए मुक़ाबला करने वाला बना दीजिए जो क़ाबिल-ए-मुक़ाबला है। आमीन।